❍ 12 / 10 / 22 की मुरली से चार्ट ❍
⇛ TOTAL MARKS:- 100 ⇚

∬ 1 ∬ होमवर्क (Marks: 5∗4=20)

➢➢ ∗स्वदर्शन चक्रधारी बनकर रहे ?∗

➢➢ ∗बाप पर पूर अपूर बलिहाल गए ?∗

➢➢ ∗एकरस स्थिति के आसन पर मन-बुधी को बिठाया ?∗

➢➢ ∗दूसरो के विचारों को अपने विचारों से मिलाया ?∗

────────────────────────

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

☆ ∗अव्यक्त पालना का रिटर्न∗ ☆

❂ ∗तपस्वी जीवन∗ ❂

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ ∗कर्मातीत अर्थात् कर्म के वश होने वाला नहीं लेकिन मालिक बन, अथॉरिटी बन कर्मेन्द्रियों के सम्बन्ध में आये, विनाशी कामना से न्यारा हो कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म कराये।∗ आत्मा मालिक को कर्म अपने अधीन न करे लेकिन अधिकारी बन कर्म कराता रहे। ∗कराने वाला बन कर्म कराना-इसको कहेंगे कर्म के सम्बन्ध में आना। कर्मातीत आत्मा सम्बन्ध में आती है, बन्धन में नहीं।∗

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∬ 2 ∬ तपस्वी जीवन (Marks:- 10)

➢➢ *इन शिक्षाओं को अमल में लाकर बापदादा की अव्यक्त पालना का रिटर्न दिया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

———————————————

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

☆ *अव्यक्त बापदादा द्वारा दिए गए* ☆

❂ *श्रेष्ठ स्वमान* ❂

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

✺ *"मैं राजऋषि हूँ"*

〰✧ सभी राजऋषि हो ना? *राज अर्थात् अधिकारी और ऋषि अर्थात् तपस्वी। तपस्या का बल सहज परिवर्तन कराने का आधार है।*

〰✧ *परमात्म-लगन से स्वयं को और विश्व को सदा के लिये निर्विग्न बना सकते हैं। निर्विग्न बनना और निर्विग्न बनाना - यही सेवा करते हो ना।*

〰✧ *अनेक प्रकार के विघ्नों से सर्व आत्माओंको मुक्त करने वाले हो। तो जीवनमुक्ति का वरदान बाप से लेकर औरों को दिलाने वाले हो ना। निर्बन्धन अर्थात् जीवनमुक्त।*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

∬ 3 ∬ स्वमान का अभ्यास (Marks:- 10)

➢➢ *इस स्वमान का विशेष रूप से अभ्यास किया ?*

✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° ° ••☆••✧ ° °

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *रूहानी ड्रिल प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा की प्रेरणाएं* ☆

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ *रोज दिन समाप्त होने अपने सहयोगी कर्मचारियों को चेक करो।* अगर कोई भी कर्मेंद्रियों से वा कर्मचारी से बार-बार गलती होती रहती है तो गलत कार्य करते-करते संस्कार पक्के हो जाते हैं। फिर चेज करने में समय और मेहनत भी लगती है।

〰✧ उसी समय चेक किया और चेंज करने की शक्ति दी तो सदा के लिए ठीक हो जायेंगे। सिर्फ बार-बार चेक करते रहो कि यह रांग है, यह ठीक नहीं है और उसको चेंज करने की युक्ति व नॉलेज की शक्ति नहीं दी तो सिर्फ बार-बार चेक करने से भी परिवर्तन नहीं होता। इसलिए *पहले सदा कर्मेन्द्रियों को नॉलेज की शक्ति से चेज करो।*

〰✧ सिर्फ यह नहीं सोचो कि यह रांग है। लेकिन राइट क्या है और राइट पर चलने की विधि स्पष्ट हो। अगर किसी को कहते रहेंगे तो *कहने से परिवर्तन नहीं होगा लेकिन कहने के साथ-साथ विधि स्पष्ट करो तो सिद्धि हो।*

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 4 ∫∫ रूहानी ड्रिल (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर रूहानी ड्रिल का अभ्यास किया ?*

⊹˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

❂ *अशरीरी स्थिति प्रति* ❂

☆ *अव्यक्त बापदादा के इशारे* ☆

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

〰✧ चारों ओर हलचल है, प्रकृति के सभी तत्व खूब हलचल मचा रहे हैं, एक तरफ भी हलचल से मुक्त नहीं हैं, व्यक्तियों की भी हलचल है, प्रकृति की भी हलचल है, *ऐसे समय पर जब इस सृष्टि पर चारों ओर हलचल है तो आप क्या करेंगे? सेफ्टी का साधन कौन-सा है? सेकण्ड में अपने को विदेही, अशरीरी व आत्म-अभिमानी बना ली तो हलचल में अचल रह सकते हो।* इसमें टाइम तो नहीं लगेगा? क्या होगा? अभी ट्रायल करो- एक सेकण्ड में मन-बुद्धि को जहाँ चाहो वहाँ स्थित कर सकते हो? (ड्रिल) *इसको कहा जाता है - साधना।*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

∫∫ 5 ∫∫ अशरीरी स्थिति (Marks:- 10)

➢➢ *इन महावाक्यों को आधार बनाकर अशरीरी अवस्था का अनुभव किया ?*

✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚ ••☆••✧˚ ˚

────────────────────────

∫∫ 6 ∫∫ बाबा से रूहरिहान (Marks:-10)
(आज की मुरली के सार पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- रूहानी कमाई में बहुत ध्यान देना है, समय वेस्ट नही करना"*

➳ _ ➳ मधुबन घर में डायमण्ड हॉल में अपने प्यारे बाबा को निहारती हुई मै आत्मा... कभी अपने महान भाग्य को, कभी इस ईश्वरीय मिलन के खबसरत

समय को... देख रही हूँ... कि जीवन में अनगिनत दुखो की भोगना यूँ पीछे गुजर गयी... और मै आत्मा इस खुबसूरत समय पर भगवान के सम्मुख आ गयी... *इस सुनहरे वक्त ने मुझे ईश्वर से मिलाकर... मेरा भविष्य सुनहरे अक्षरो में लिख दिया है... आज सतयुग मेरे कदमो की आहट लेने को आतुर है... सुख मेरी बाट जोह रहे है.. खुशियां मेरा रास्ता निहार रही है.*.. अमीरी मुझे बाँहों में भर लेने को दीवानी है... सारे दुःख गायब हो गए है और अथाह सुख मेरी नजरो में प्रत्यक्ष हो रहे है... और कह रहे है... मीठे बाबा की यादो में गहरे डूब जाओ... ती हम सजीव बन आपकी सेवाओ में हाजिर है... *वाह... कितना प्यारा यह, मीठे बाबा के साथ भरा समय है.*..

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को अमूल्य ज्ञान मणियो से सजाकर कहा :-* "मीठे प्यारे फूल बच्चे... *ईश्वरीय ज्ञान रत्नों को पाकर, यादो में सच्ची कमाई करने वाले महान भाग्यशाली बनो.*.. संगम के वरदानी समय के हर पल को यादो में सफलकर सच्ची कमाई से भरपूर बनो... ईश्वर के साथ भरा यह मीठा समय... अब व्यर्थ बातो में नही गंवाओ... मीठे बाबा से सारी दौलत खजाने लेकर... सदा की अमीरी से सज जाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा के प्यार में सारी जागीर की मालिक बनकर कहती हूँ ;-* "मीठे मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा आपकी छत्रछाया में सुखी और अमीर जीवन को पाती जा रही हूँ... *आपको पाकर अब मै आत्मा किसी भी व्यर्थ में स्वयं को उलझाती नही हूँ... बल्कि हर क्षण यादो में खोकर, अपने सारे विकर्मो से मुक्त होती जा रही हूँ.*.. यादो की कमाई करके विश्व की अमीरी को पाती जा रही हूँ ..."

❉ *प्यारे बाबा ने मुझ आत्मा को समय का महत्व समझाते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे लाडले बच्चे... *यही वह कीमती पल है, जिसमे मीठे बाबा को याद करके... अथाह सम्पत्ति और सुख भरा भविष्य अपनी तकदीर में सजा सकते हो.*.. इस सुनहरे समय को साधारण रीति या व्यर्थ में न बिताओ... हर पल याद का निरन्तर अभ्यास कर... स्वयं का महान भाग्य स्वयं लिखो... सच्ची कमाई के पीछे दीवाने होकर जुट जाओ..."

➳ _ ➳ *मै आत्मा मीठे बाबा की श्रीमत को दिल में गहरे उतार कर कहती हूँ ;-* "मीठे प्यारे बाबा मेरे... मै आत्मा देह की और दुखो की दुनिया में जो घिरी तो... अपनी सारी खुशियां गुण और दौलत ही गंवा बेठी... अब आपने आकर मुझे पुनः दौलतमंद और खुशहाल बनने का सारा राज बता दिया है... *मै आत्मा हर साँस आपकी यादो में डूबकर, सच्ची दौलत को अपनी बाँहों में बटोरती जा रही हूँ..*."

❉ *मीठे बाबा ने मुझ आत्मा को सर्वगुणों और शक्तियो से भरपूर करते हुए कहा :-* "मीठे प्यारे सिकीलधे बच्चे... इस पुरानी दुनिया की विनाशी दौलत के पीछे बहुत खपे हो... अब मीठे बाबा से 21 जनमो की अमीरी लेकर विश्व के बादशाह बनो... *एक एक पल कमाई से भरपूर हो, मन बुद्धि को मीठे बाबा की याद में पूरा झोंक दो.*.. यादो में ही पुराने सारे विकर्म भस्म होंगे और सुखो भरा खुबसूरत जीवन आपके हाथो में होगा... इसलिए निरन्तर याद में खोये रहो..."

➳ _ ➳ *मैं आत्मा प्यारे बाबा को मुझ आत्मा के सुख के लिए इस कदर आतुर देख कहती हूँ :-* "मीठे मीठे प्यारे बाबा... मै आत्मा कितनी महान हूँ, और कितनी भाग्यशाली हूँ... कि भगवान बेठ मुझे यूँ अमीर बना रहा है... और मुझे विश्व का मालिकाना हक दिलवा रहा है... मै आत्मा इतनी अमीर बनूंगी, यह तो कभी ख्यालो में भी न था... *आज आपकी सच्ची यादो में यह जीवन की खुबसूरत हकीकत बन रही है... और मै आत्मा हर साँस से यादो की कमाई कर, अमीर और अमीर होती जा रही हूँ.*.."प्यारे बाबा से यूँ मीठी रुहरिहानं कर मै आत्मा... अपने कर्मक्षेत्र पर लौट आयी....

∫∫ 7 ∫∫ योग अभ्यास (Marks:-10)
(आज की मुरली की मुख्य धारणा पर आधारित...)

✺ *"ड्रिल :- हम ब्राह्मण चोटी हैं, ईश्वरीय सम्प्रदाय के हैं, इस नशे में रहना है*"

➳ _ ➳ अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित मैं आत्मा मन ही मन विचार करती हूँ कि कितनी पदमापदम सौभाग्यशाली हूँ मैं आत्मा कि *जिस ब्राह्मण सम्प्रदाय को भक्ति में सबसे ऊंच माना जाता है वो सच्ची ब्राह्मण आत्मा मैं हूँ जिसे स्वयं परम पिता परमात्मा ने आ कर ब्रह्मा मुख से अडॉप्ट करके ईश्वरीय सम्प्रदाय का बनाया है*। मैं वो कोटो में कोई और कोई में भी कोई सौभाग्यशाली आत्मा हूँ जिसे स्वयं भगवान ने चुना है।

➳ _ ➳ बड़े - बड़े महा मण्डलेशवर, साधू सन्यासी जिस भगवान की महिमा के केवल गीत गाते हैं लेकिन उसे जानते तक नही, वो भगवान रोज मेरे सम्मुख आकर मेरी महिमा के गीत गाता है। *रोज मुझे स्मृति दिलाता है कि "मैं महान आत्मा हूँ" "मैं विशेष आत्मा हूँ" "मैं इस दुनिया की पूर्वज आत्मा हूँ"। *"वाह मेरा सर्वश्रेष्ठ भाग्य" जो मुझे घर बैठे भगवान मिल गए और मेरे जीवन मे आकर मुझे नवजीवन दे दिया*। उनका निस्वार्थ असीम प्यार पा कर मेरा जीवन धन्य - धन्य हो गया। इस जीवन में अब कुछ भी पाने की इच्छा शेष नही रही। जो मैंने पाना था वो अपने ईश्वर, बाप से मैंने सब कुछ पा लिया है।

➳ _ ➳ अपने सर्वश्रेष्ठ भाग्य की स्मृति में खोई हुई मैं अपने भाग्य को बदलने वाले भाग्यविधाता बाप को जैसे ही याद करती हूँ वैसे ही मेरे भाग्यविधाता बाप मेरे सामने उपस्थित हो जाते हैं। *अपने लाइट माइट स्वरूप में भगवान जैसे ही मुझ ब्राह्मण आत्मा पर दृष्टि डालते हैं उनकी पावन दृष्टि मुझे भी लाइट माइट स्वरूप में स्थित कर देती है और डबल लाइट फ़रिश्ता बन मैं चल पड़ती हूँ बापदादा के साथ इस साकारी लोक को छोड़ सूक्ष्म लोक में*। बापदादा के सामने मैं फ़रिश्ता बैठ जाता हूँ।

➳ _ ➳ बापदादा की मीठी दृष्टि और उनकी सर्वशक्तियों से स्वयं कोभरपूर करके मैं अपने जगमग करते ज्योतिर्मय स्वरूप को धारण कर अपने परमधाम घर की ओर चल पड़ती हूँ। *सेकण्ड में मैं आत्मा पहुँच जाती हूँ अपने घर मुक्तिधाम में। यहां मैं परम मुक्ति का अनुभव कर रही हूँ। मैं आत्मा शांति धाम में शांति के सागर अपने शिव पिता परमात्मा के सम्मुख गहन शान्ति का

अनुभव कर रही हूँ*। मेरे शिव पिता परमात्मा से सतरंगी किरणे निकल कर मुझ आत्मा पर पड़ रही हैं और मैं स्वयं को सातों गुणों से सम्पन्न अनुभव कर रही हूँ। शिव बाबा से अनन्त शक्तियाँ निकल कर मुझ में समाती जा रही हैं। कितना अतीन्द्रिय सुख समाया हुआ है इस अवस्था में।

➳ _ ➳ बीज रूप अवस्था की गहन अनुभूति करने के बाद अब मैं आत्मा वापिस लौट आती हूँ अपने साकारी ब्राह्मण तन में और भृकुटि पर विराजमान हो जाती हूँ। *अपने ब्राह्मण स्वरूप में स्थित मैं आत्मा अब सदा इसी नशे में रहती हूँ कि मैं सबसे उंच चोटी की हूँ, ईश्वरीय सम्प्रदाय की हूँ*। आज दिन तक मेरा यादगार भक्ति में ब्राह्मणों को दिये जाने वाले सम्मान के रूप में प्रख्यात है। *आज भी भक्ति में ब्राह्मणों का इतना आदर और सम्मान किया जाता है कि उनकी उपस्थिति के बिना कोई भी कार्य सम्पन्न नही माना जाता और वो सच्ची ब्राह्मण आत्मा वो कुख वंशवाली ब्राह्मण नही बल्कि ब्रह्मा मुख वंशावली, ईश्वरीय पालना में पलने वाली, मैं सौभाग्यशाली आत्मा हूँ"।

———————————————

∫∫ 8 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के वरदान पर आधारित...)

✺ *मैं एकरस स्थिति के आसन पर मन बुद्धि को बिठाने वाली आत्मा हूँ।*
✺ *मैं सच्ची तपस्वी आत्मा हूँ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 9 ∫∫ श्रेष्ठ संकल्पों का अभ्यास (Marks:- 5)
(आज की मुरली के स्लोगन पर आधारित...)

✺ *मैं आत्मा सदैव दूसरे के विचारों को अपने विचारों से मिला लेती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा सदा सर्व को सम्मान देती हूँ ।*
✺ *मैं आत्मा माननीय बनने के साधन को अपना लेती हूँ ।*

➢➢ इस संकल्प को आधार बनाकर स्वयं को श्रेष्ठ संकल्पों में स्थित करने का अभ्यास किया ?

———————————————

∫∫ 10 ∫∫ अव्यक्त मिलन (Marks:-10)
(अव्यक्त मुरलियों पर आधारित...)

✺ अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ *आज बापदादा अपने चारों ओर के बच्चों को देख हर्षित हो रहे हैं* क्योंकि बाप जानते हैं कि मेरा एक-एक बच्चा चाहे लास्ट पुरुषार्थी भी है फिर भी विश्व में सबसे बड़े ते बड़े भाग्यवान है क्योंकि *भाग्य विधाता बाप को जान, पहचान भाग्य विधाता के डायरेक्ट बच्चे बन गये। ऐसा भाग्य सारे कल्प में किसी आत्मा का न है, न हो सकता है।* साथ-साथ सारे विश्व में सबसे सम्पत्तिवान वा धनवान और कोई हो नहीं सकता। चाहे कितना भी पदमपति हो लेकिन *आप बच्चों के खजानों से कोई की भी तुलना नहीं है क्योंकि बच्चों के हर कदम में पदमों की कमाई है। सारे दिन में हर रोज चाहे एक दो कदम भी बाप की याद में रहे वा कदम उठाया, तो हर कदम में पदम...* तो सारे दिन में कितने पदम जमा हुए? ऐसा कोई होगा जो एक दिन में पदमों की कमाई करे! इसलिए *बापदादा कहते हैं अगर भाग्यवान देखना हो वा रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड आत्मा देखनी हो तो बाप के बच्चों को देखो।*

✺ *ड्रिल :- "बाप के रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड बच्चे होने का अनुभव"*

➳ _ ➳ ड्रामा की रील को रिवर्स कर... मैं भाग्यशाली आत्मा पहुँच जाती हूँ... *उस घडी, उस पल, उस समय में जब वो मेरे जीवन में आया... उसने

मुझे अपना बनाया... मेरा हाथ थामा, मुझे गले लगाया... कितनी हंसीन वो घड़ी थी जब भाग्यविधाता, वरदाता, परमसत्ता ही मेरा हो गया...* वो विश्व का मालिक जिसकी एक झलक को भक्त तरसते, हिमालय पर बैठे वो तपस्वी उसको पाने के लिए तपस्या करते... और *वो दाता भाग्यविधाता मेरा हो गया, और मैं उसकी हो गयीं...* इस अदभुत, अविस्मरणीय डायंमड़ *अनमोल यादों में खोई मैं आत्मा प्रकृति के सानिध्य में बैठी हूँ...*

➳ _ ➳ और *इन पलों को एक बार फिर से जी रही हूँ... जैसे-जैसे ये एक-एक पल, सीन सामने आ रही है... मैं आत्मा एक बार फिर उसी खुशी, नशे, उमंग का अनुभव कर रही हूँ...* इन पलों को फिर से एक बार जीती, अपने भाग्य पर इतराती, बलखाती, मैं पदमा-पदम भाग्यशाली आत्मा मन उपवन में नृत्य कर रही हूँ... तभी अचानक *मुझ आत्मा पर रिम-झिम लाइट की बारिश होने लगती हैं... ये लाइट की बारिश मुझे परमात्म-प्यार में भीगों रही हैं... मैं आत्मा ऊपर देखती हूँ... बापदादा बादलों के बीच से मुझे देख-देख हर्षित हो रहे है... और वाह बच्चे वाह के गीत गा रहे बाहें फैलाएँ मेरा आवाहन कर रहे हैं...* बाबा को देख मैं आत्मा फूल की तरह खिल जाती हूँ... जैसे मैं आत्मा आगे की तरफ कदम बढाती हूँ... तभी एक सुनहरी सीढी मुझ आत्मा के सामने आ जाती हैं... जिस पर लिखा है... *"ईश्वरीय संतान"*

➳ _ ➳ जैसे ही मैं आत्मा इस सीढी पर पांव रखती हूँ... *मुझ आत्मा की साकारी देह परिवर्तन होकर लाइट की हो जाती है...* ... मैं आत्मा ईशवरीय संतान हूँ... इस नशे से भर गयीं हूँ... *मेरे एक एक कदम आगे बढाने से मुझे खुशी और उमंग अनुभव होता है... अपने भाग्य पर नाज़ हो रहा है... मेरे कदम चढ़ती कला की और बढ़ रहे है... मेरे कदमों में पदमों की कमाई जमा हो रही है... अपने पार्ट पर, अपने भाग्य पर मुझ आत्मा को नाज हो रहा हैं...* परमात्म-प्यार, परमात्म-पालना, परमात्म-साथ का अनुभव कर रही हूँ... *परमात्मा की सर्व शक्तियों से सम्पन्न अनुभव कर रही हूँ...* एक दूसरी सुनहरी सीढी मुझ आत्मा के सामने आ जाती हैं... जिस पर लिखा है... *"सर्व खजानों की अधिकारी आत्मा"* जैसे ही मैं आत्मा इस सीढी पर पांव रखती हूँ... यह सीढी परिवर्तन होकर एक दरवाजा बन जाती हैं... *बाबा मुझे एक चाबी देते है... जैसे ही मैं आत्मा दरवाजा खोलती हूँ... अन्दर अथाह खजाने है...*

➳ _ ➳ रंग-बिरंगे ढेर सारे खजाने है और *एक-एक खजाना करोड़ों का है अविनाशी हैं...* मैं आत्मा स्वयं को सर्व खजानों से सम्पन्न अनुभव कर रही हूँ... *मैं आत्मा अपनी धनवान, सम्पतिवान स्थिति का अनुभव कर रही हूँ...* तभी बाबा मुझ आत्मा के सामने आते है और मुझ फरिश्ते के सिर पर हाथ फेरते है... *बापदादा भी मुझ आत्मा के श्रेष्ठ भाग्य को देख हर्षित हो रहे हैं... और मुझ आत्मा के भाग्य के गीत गा रहे है...* बाबा मुझ आत्मा को गोद में उठा लेते है... और मेरे सिर पर हाथ फेरते हुए... *वाह मेरे मोस्ट रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड पदमापदम भाग्यशाली बच्चे वाह...* मैं नन्हा फरिश्ता भी परमसत्ता की गोद में बैठी, अपने भाग्य को देख-देख हर्षा रही हूँ...

➳ _ ➳ *मैं आत्मा बाप की मोस्ट रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड बच्चे होने का अनुभव कर रही हूँ...* वाह क्या श्रेष्ठ भाग्य मुझ आत्मा का हैं जो भाग्यविधाता, वरदाता मुझ आत्मा का हो गया है... कितने अथाह खजानों के मालिक बाबा ने मुझे बना दिया हैं... *परमसत्ता बाबा की गोदी से मैं नन्हा फरिश्ता पूरे विश्व को देख रहा हूँ... और मुझ आत्मा को अपने भाग्य पर नाज हो रहा हैं... और बाप के मोस्ट रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड बच्चे होने के नशे से भर गया हूँ...* अब मैं फरिश्ता साकारी दुनिया की तरफ इसी नशे अनुभव के साथ लौट रहा हूँ...

➳ _ ➳ अब देख रही हूँ मैं आत्मा स्वयं को अपनी ब्राह्मण ड्रेस को धारण कर *मैं आत्मा सारे दिन में हर कर्म बाबा की याद में कर... याद रुपी कदम में पदमों की कमाई जमा कर रही हूँ...* मोस्ट रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड इस नशे के साथ मैं महान धनवान, सम्पत्तिवान आत्मा सर्व खजानों को जो मुझ आत्मा के पास है... जो *एक-एक खजाना करोड़ों का हैं... उसे स्व और अन्य आत्माओं के प्रति यूज़ कर रही हूँ... उन्हें भी धनवान और सम्पतिवान बना रही हूँ... उन्हें आपसमान बना रही हूँ...* मैं बाप की मोस्ट रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड बच्चा हर कर्म इसी नशे में, बाबा की याद में कर रही हूँ... और यही अनुभव कर रही हूँ... *तुम्हें पा के हमनें जहाँ पा लिया हैं... जमी तो जमी आसमा पा लिया है...*

⊙_⊙ आप सभी बाबा के प्यारे प्यारे बच्चों से अनुरोध है की रात्रि में सोने से पहले बाबा को आज की मुरली से मिले चार्ट के हर पॉइंट के मार्क्स ज़रूर दें ।

♔ ॐ शांति ♔